केला

किस्में

डवारफ कैवेंडिश (एएए)

महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार और पश्चिम बंगाल के राज्यों में **तालिका** और **प्रसंस्करण** उद्देश्यों के लिए बड़े पैमाने पर उगाई जाने वाली यह एक लोकप्रिय व्यावसायिक किस्म है। यह तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र में भी लोकप्रिय है। 'बसराई' कैवेंडिश समूह की अग्रणी वाणिज्यिक किस्म है और महाराष्ट्र की एक अग्रणी वाणिज्यिक किस्म है। पौध रचना डवारफ गठन की है जो हवा की गति से कम झुकता है। गुच्छों का साईज, फलों की लम्बाई और साईज बहुत अच्छा है, यद्यपि गुणवत्ता ज्यादा कमजोर है। 6-7 हैन्डों का औसतन गुच्छे का वजन औी लगभग प्रति हैंड 13 फलों का वजन लगभग 15-25 किलो ग्राम होता है। जब फल पकता है तो फल की पतली चमड़ी कुछ हद तक हरे रंग की हो जाती है। इसकी लंबी फसल अवधि के बावजूद भी गनदेवी चयन जिसे 'हनुमान' या 'पाडेरे' के रुप में जाना जाता है, अच्छी पहचान प्राप्त कर रही है। चयनित गुच्छों का वजन 55-60 कि0ग्रा0 होता है। उच्च इनपुट सहित हल्की मिट्टी में इसकी परफोरमैन्स अच्छी है। उच्च धनत्व रोपण और ड्रिप सिंचाई के साथ संयोजन होने से डवारफ कैवेंडिश एक उच्च सफल कल्टीवर बन रहा है। नम उष्णकटिबंधीय में सिगाटोका लीफ स्पॉट रोग की इसमें ज्यादा संभावना रहती है जो इसकी व्यावसायिक खेती को सीमित करती है।

रोबस्टा (एएए) :

यह एक अर्द्ध लम्बी किस्म है, **तालिका उद्देश्य** हेतु तमिलनाडू के अधिकांश क्षेत्रों में और कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में उगाई जाती है। यह अच्छे विकसित फलों वाले बड़े आकार के गुच्छों को पैदा करती है और यह एक उच्च उपज है। पकने पर गहरे हरे फल चमकदार पीले रंग में बदल जाते हैं और यह पकने की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। फल बहुत मीठा और इसकी खशबू अच्छी है। गुच्छों का वजन 25-30 कि0ग्रा0 है। प्रापिंग की आवश्यकता होती है। फलों की गुणवत्ता कमजोर है जो पकने के बाद गुलदी को तेजी से नीचे गिरा देती है, इसलिए लंबी दूरी वाले परिवहन के लिए यह उपयुक्त नहीं है। नम उष्णकटिबंधीय में सिगाटोका लीफ स्पॉट रोग के प्रति रोबस्टा अति संवेदनशील है।

रसथाली (सिल्क एएबी) :

यह व्यावसायिक रूप से तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक और बिहार में उगाई जाने वाली एक मध्यम लंबी किस्म है। **तालिका उद्देश्य** हेतु इसकी अनूठी फल क्वालिटी ने रसथाली को लोकप्रिय बनाया है। फल अपने विकास के दौरान पीले हरे हो जाते हैं, परन्तु पकने के बाद फीके पीले से सुनहरी पीले में बदल जाता है। फल बहुत ही स्वादिष्ट और इसकी खशबू अच्छी है। लंबी फसल अवधि में, फुजेरियम विल्ट के प्रति अति संवेदनशीन, सूर्य की कडकती धूप से फलों की रक्षा करने के लिए बंच कवर की आवश्यकता और फल फसल उत्पादन में कठिन गांठों का निर्माण कार्य अधिक महंगा है।

पूवन (मैसूर एएबी):

यह स्थान विशेष इकोटाईप सहित जैसे केरल में पालियाकोडन, तमिलनाडू में पूवन, आंधप्रदेश में करपूरा चकराकेली और पूर्वोत्तर क्षेत्र में पूरे भारत में उगाई जाने वाली एक अग्रणी वाणिज्यिक फसल है। इसकी आम तौर पर एक बारहमासी फसल के रूप में खेती की जाती है। तमिलनाडु अपनी जलवायु और सीमांत मिट्टी की स्थिति के कारण पूवन किस्म का प्रमुख उत्पादक राज्य है। पूवन किस्म की केरल के कुछ हिस्सों में और पूरे तमिलनाडू में पत्ती उद्योग के लिए व्यावसायिक रूप में खेती की जाती है। फल, थोड़ा अम्लीय, कठोर और खट्टा-मीठा सुगंध वाला है। फल पकने पर आकर्षक सुनहरे पीले रंग में परिवर्तित हो जाता है। मध्यम आकार के गुच्छे, क्लोस्ली पैकट फल, अच्छी गुणवत्ता वाला और फल चटकाव में प्रतिरोधी होना इसके लाभकारी बिन्दु हैं। परन्तु यह बनाना ब्रैकिट मोजेक वाइरस (बीबीएमवी) और बनाना स्ट्रीक वाइरस के प्रति अति संवेदनशील है जिसकी वजह से इसकी उपज में कमी हो जाती है।

नेन्ट्रन (AAB) :

यह केरल में बहुत ही लोकप्रिय किस्म है जहां पर इसे **प्रोसेसिंग** के प्रयोग और स्वादिष्ट फल के रुप में पसन्द किया जाता है। हाल ही में, तमिलनाडू में नेन्ट्रन की वाणिज्यिक खेती को तेजी से ऊपर उठाया गया है। पौधों की ऊंचाई में काफी विविधता के प्रदर्शन, छद्म रंग, मेल एक्सि की उपस्थिति या अनुपस्थिति, गुच्छों का आकार आदि के लिए नेन्ट्रन को जाना जाता हैं। गुच्छों में 5-6 हैण्डस होते हैं और इनका वजन लगभग 12-15 कि0ग्रा0 होता है। फलों की मोटी हरी चमड़ी वाली एक विशिष्ट गर्दन होती है जो पकने पर बहुत ज्यादा पीले रंग में बदल जाती है। फल पकने पर भी स्टार्च के रूप में रहता है। नेन्ट्रन जो कि बनाना ब्रैकिट मोजेक वाइरस (बीबीएमवी), निमाटोडस और बोररस के प्रति अति संवेदनशील है।

लाल केला (एएए):

लाल केले को बहुत ज्यादा पसन्द किया जाता है तथा केरल और तमिलनाडू में इसे अत्यधिक मूल्यवान किस्म माना गया है। इसकी वाणिज्यिक खेती तमिलनाडु के कन्याकुमारी और तिरुनेलवेली जिलों में प्रमुख है। यह कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश और कुछ हद तक पश्चिमी और मध्य भारत में भी लोकप्रिय है। बिहार व अन्य क्षेत्रों में यह लाल वलची के रूप में जबकि कर्नाटक में चन्द्रा बेली के रूप में लोकप्रिय है। छद्म, तना, मिडरिब और फल छिलके का रंग बैंगनी लाल है। अच्छी प्रबंधन पद्धतियों के अंतर्गत यह एक मजबूत पौधा है और इसके गुच्छों में 20-30 कि0ग्रा0 वजन होता है। यह फल मीठा, नारंगी पीले रंग का और सुगन्धित खुशबू वाला होता है। यह बन्ची टॉप, फयूजेरियम विल्ट और नेमाटोड के लिए अति संवेदनशील है।

नेय पूवन (एबी) :

नेय पूवन उत्तम द्विगुणित किस्म है, जिसकी विशेषकर कर्नाटक और तमिलनाडू में बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक मोनो खेती की जाती है। केरल में पिछवाड़े में इसकी खेती की जाती हैं और अब इसे बड़े पैमाने की खेती के रूप में बदला गया है। 12-14 महीनों के बाद 15-30 किलों के गुच्छों का नेय पूवन एक पतला पौधा है। बहुत अच्छी गुणवत्ता वाला गहरे हरे रंग का फल सुनहरी पीले रंग में बदल जाता है। फल बहुत ही स्वादिष्ट, सुगन्धित, पाउडर से पुता हुआ और कठोर है। नेय पूवन लीफ स्पॉट के लिए सहिष्णु है परन्तु फयूजेरियम विल्ट और बनाना ब्रैकिट मोजेक वाइरस के प्रति संवेदनशील है।

विरूपाकाशी (एएबी):

इसे दक्षिण भारत में विशेषकर तमिलनाडू के पलानी और शिवरो की पहाड़ियों में **तालिका प्रयोजन** हेतु सहाबाहर खेती के तहत एक विशिष्ट किस्म के रूप में उगाया जाता है। यह एक सशक्त और कठोर रूप वाली किस्म है हालांकि यह प्रोलिफिक नहीं है। यह फल टिपिकल वक्रता को दिखाता है, इसमें सुगन्धित खुशबू और आनंदमय स्वाद है। जब इनकी ऊंचे स्थान पर खेती की जाती है तो विरूपाकाशी का विशेष स्वाद होता है। मिश्रित खेती में युवा कॉफी के लिए छाया पौधें के रूप में यह बहुत ही उपयुक्त है। इसकी बहुत ही इकोटाईपस हैं जैसे 'सिरूमुलाई' (पहाड़ियों पर उगने वाली), 'वानन', 'काली' आदि और यह मैदानी इलाकों में बहुत ही अनुकूल है। खेती की बारहमासी प्रणाली बनाना बंची टॉप वाइरस को उत्तेजित करती है।

पाचहानादेन (एएबी):

यह तमिलनाडू में बहुत ही लोकप्रिय किस्म है और यह गर्मियों में गर्म इलाकों में अपने शीतलन प्रभाव के लिए विशेष रूप से उगाई जाती है। यह किस्म किसी भी उपज में कमी के बिना सीमांत मिट्टी में अच्छी तरह से आती है। नारियल और सुपारी के बागों में एक इन्टरक्रॉप के रूप में यह बहुत ही अनुकूल है। गुच्छे का वजन (11-12 माह बाद) 12-15 कि0ग्रा0 होता है। नेन्ट्रन वृक्षारोपण में अंतराल को भरने के लिए पाचहानादेन का इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि यह नेन्ट्रन के साथ फसल-कटाई हेतु उग जाता है। यह किस्म लीफ स्पॉट और बनाना बंची टॉप वाइरस (बीबीटीवी) रोगों के लिए सहिष्णु है, परन्तु विल्ट रोग प्रति संवदेनशील है।

मोन्थन (एबीबी) :

इसकी **प्रोसेसिंग** हेतु व्यापक रूप से खेती की जाती है। मोन्थन एक काफी लंबा और मजबूत पौधा है जिसमें 12 माह के बाद 18-20 कि0ग्रा0 के गुच्छे लगते हैं। इनका नोबेड और पीला हरा रंग होता है। इनकी चमड़ी प्राय: हरी रहती है। आर्थिक मूल्य की नई प्रोलफिक 'मोन्थन' प्रकार के क्लोन जिनके नाम 'कांची वाजाई' और 'चाकाई' है, अब हाल ही में तमिलनाडू में लोकप्रिय हो रही है। फलों के अपने क्यूलनेरी उपयोग के अलावा, छद्म कोर कई औषधीय गुणों सहित बेहद पसन्द आने वाली सब्जी है। तमिलनाडू के त्रिची और तंजौर जिलों में पत्तों के उत्पादन के लिए मोन्थन की खेती भी की जाती है। इसमें अनेक वांछनीय गुण है जैसे बनाना बन्ची टॉप वाइरस रोग (बीबीटीवी) से छुटकारा, सीमांत अवस्था के तहत भी नमक सहिष्णुता और सामान्य गुच्छा मैस, लेकिन यह फयूजेरियम विल्ट रोग के प्रति अतिसंवेदनशील है।

करपुरावल्ली (एबीबी):

यह मध्यम चमकीली मिट्टी में **तालिका प्रयोजन** हेतु उगाई जाने वाली एक लोकप्रिय किस्म है। इसकी व्यावसायिक खेती तमिलनाडू और केरल के मध्य और दक्षिणी जिलों में फैली हुई है। बिहार में, 'कन्थाली' के नाम से पैचों में इसकी खेती की जाती है। करपुरावल्ली एक लम्बा और मजबूत पौधा है जो सीमांत भूमि और मिट्टी के लिए बहुत अनुकूल है, इसे कम निवेश वाली अवस्थाओं में उगाया जाता है। यह भारतीय केलों में बहुत ही मीठा है। मौसमी परिवर्तनशीलता पर निर्भर होने की वजह से करपुरावल्ली को कभी-कभी उगाया जाता है। ैइसकी राख सुनहरी पीली और मीठे फल अच्छी गुणवत्ता वाले होते हैं। करपुरावल्ली विल्ट रोग से अति संवेदनशील है, लीफ स्पॉट रोग के प्रति सहिष्णु है तथा सूखा, नमक प्रभावित क्षेत्रों और कम इनपुट स्थितियों के लिए अनुकूल मानी गई है।

सफेद वल्ची मूसा (ए बी समूह) :

इसे **तालिका प्रयोजन** के लिए अच्छी किस्म का फल माना गया है और महाराष्ट्र के थाने, नाशिक जिलों में इसकी खेती की जाती है। कर्नाटक के दक्षिण कनारा जिलों में सुपारी बागानों की छाया में उगाया जाता है। यह किस्म पतली पीली हरे छद्म की मध्यम आकार की होती है और इसे लाल डंठल माजिन, लम्बे फल, बहुत पतला और कागजी छिलका तथा सफेद फर्म फलैश जो बहुत मीठा होता है, के रूप में पहचाना जाता है। गुच्छे का औसतन वजन लगभग 12 किलोग्राम है और प्रत्येक गुच्छे में लगभग 150 फल लगते हैं। इस किस्म की अवधि लगभग 13 महीनों की है।

आकर्षक किस्में :

यूएसऐ

डवारफ कैवेंडिश, जाइअन्ट कैवेंडिश, पिशंग माशक हिजू, आईस क्रीम, इनानो जाइअन्ट, माचो, ओरीनोको

ब्राजील

रोबुस्ता, सन्त कटारिना सिल्वर, ब्राजीलियन

चीन

डवारफ कैवेंडिश

साउथ अफ्रीका

डवारफ कैवेंडिश, गोल्डन ब्यूटी

आस्ट्रेलिया

रोबुस्ता, विलियम्स, कोकोज

ईस्ट अफ्रीका , थाईलैंड

ब्लूगो, मैरीकोंगो, कॉमन डवारफ

फिलीपिन्स

कॉमन डवारफ, फिलीपिन लाकटन

ताइवान

जाइअन्ट कैवेंडिश